International Journal of Research in Social Sciences
Vol. 15 Issue 01, January 2025,
ISSN: 2249-2496 Impact Factor: 7.081
Journal Homepage: http://www.ijmra.us, Email: editorijmie@gmail.com
Double-Blind Peer Reviewed Refereed Open Access International Journal - Included in the International Serial Directories Indexed & Listed at: Ulrich's Periodicals Directory ©, U.S.A., Open J-Gate as well as in Cabell's Directories of Publishing Opportunities, U.S.A

बैधनाथ धाम कांवर यात्रा - सांस्कृतिक-आर्थिक विश्लेषण

रत्नेश कुमार, (शोधार्थी)
विश्वविद्यालय इतिहास विभाग, रांची विश्वविद्यालय, रांची

सारांश :

कांवर यात्रा एक ऐसी धार्मिक यात्रा है जिसमें लाखों भक्त गंगा से जल लेके भोले बाबा को अर्पित करने आते हैं, इस दौरान ये कांवड़ यात्री एक लंबी यात्रा करते हुए विभिन्न नियमों का पालन करते है। ये कांवर यात्रा देश के विभिन्न हिस्सों में विशेषकर श्रावण मास में प्रारम्भ होती है। इस यात्रा का इतिहास काफी प्राचीन रहा है जिसका साँस्कृतिक, आर्थिक, सामाजिक परिणाम बहुत ही व्यापक है और देवघर स्थित बाबा बैधनाथ धाम से जुड़ी विभिन्न परंपराओं और कथाओं का जनमानस पर प्रभाव व्यापक दृष्टिगोचर होता है, परंतु कुछ ऐसी प्रश्न है जो कांवर यात्रा का संबंध में अधूरे रह जाते हैं जैसे कि लाखों लोग क्यों प्रतिवर्ष कांवर यात्रा जैसा कठिन धार्मिक कार्य करते हैं? ये कांवर यात्री कौन है? उनकी यात्रा के कारण कोई सामाजिक, आर्थिक तथा सांस्कृतिक बदलाव आया है अथवा नहीं? इत्यादि प्रश्नों के उत्तर को जानने का हम प्रयास करेंगे।

शब्दकुंजी : संथाल परगना, देवघर, बैधनाथ धाम, कांवर यात्रा।

भूमिका :

मनुष्य का सांस्कृतिक आवास शहरी और ग्रामीण बस्तियों के रूप में परिलक्षित होता है उनमें से कुछ ऐसे चुनिंदा शहर होते हैं जो धार्मिक, सांस्कृतिक और आर्थिक गतिविधियों का केंद्र बनकर उभरते हैं। ऐसे शहर धार्मिक आस्थाओं, परंपराओं और रीति-रिवाज से काफी जुड़े हुए होते हैं। यह ऐसे धार्मिक स्थल होते हैं जो व्यक्ति के विश्वासों को प्रबलता प्रदान करते हुए उसे असीम शांति का अनुभव प्रदान करते हैं। ठीक ऐसा ही एक धार्मिक आस्था से ओतप्रोत शहर हमारे झारखंड राज्य का संथाल परगना क्षेत्र में देवघर जिला स्थित बैधनाथ धाम है।

International Journal of Research in Social Sciences
Vol. 15 Issue 01, January 2025,
ISSN: 2249-2496 Impact Factor: 7.081
Journal Homepage: http://www.ijmra.us, Email: editorijmie@gmail.com
Double-Blind Peer Reviewed Refereed Open Access International Journal - Included in the International Serial Directories Indexed & Listed at: Ulrich's Periodicals Directory ©, U.S.A., Open J-Gate as well as in Cabell's Directories of Publishing Opportunities, U.S.A

शिव के द्वादश ज्योतिर्लिंगों में से एक ज्योतिर्लिंग यही पर स्थापित है। साथ ही भिन्न-भिन्न कथाओं, किंवदन्तीयों के माध्यम से यह धार्मिक, सांस्कृतिक आस्था का केंद्र बना हुआ है और इसी कारण प्रत्येक वर्ष लाखों कांवर यात्री सुल्तानगंज से गंगाजल लेकर बैधनाथ धाम में बाबा को जलार्पण करने आते हैं।

बैधनाथ धाम से संबंधित पुस्तकों में गीता प्रेस द्वारा हिंदी अनुवादित शिव महापुराण, मत्स्य महापुराण और पद्म पुराण सर्वाधिक महत्वपूर्ण हैं जिनसे शिवलिंग स्थापना से संबंधित जानकारियां प्राप्त होती है। इसके अलावा राजेंद्र लाल मित्र की 'द टेंपल ऑफ़ देवघर', एस. नारायण की 'सेक्रेड काम्प्लेक्स ऑफ देवघर और राजगीर', पी. सी. राय चौधरी की 'टेंपल एंड लीजेंड ऑफ बिहार' और रूमा बोस की 'वॉकिंग वीथ पिलग्रिम' प्रमुख पुस्तकें हैं। इन पुस्तकों में बैधनाथ धाम मंदिर संबंधी विभिन्न कथा, किंवदन्ती और परंपराओं का जिक्र प्राप्त होता है।

उत्पत्ति और इतिहास :

बाबा बैधनाथ धाम के शिवलिंग से संबंधित इतिहास काफी प्राचीन प्रतीत होता है। पौराणिक कथाओं के अनुसार त्रेता युग में लंका का राजा राक्षसराज रावण ने भगवान शिव को प्रसन्न कर शिवलिंग रूप में लंका में स्थापित करना चाहता था किंतु इस कार्य में वो असफल रहा। उसकी असफलता के पीछे विष्णु और अन्य देवताओं का रचा गया एक खेल था। रावण के जाने के बाद विष्णु और देवताओं ने गंगाजल के द्वारा शिवलिंग की पूजा अर्चना की और शिवलिंग वहीं पर स्थापित कर दिया। रावण की कामना की पूर्ति के लिए शिव ने खुद को शिवलिंग में परिवर्तित किया था इसलिए इस शिवलिंग को कामना लिंग भी कहते हैं।[1] मत्स्य पुराण के अनुसार रावण ने अपने धनुष बाण से एक तालाब का निर्माण किया और इस तालाब के पानी से शिवलिंग पर जल अर्पित किया। ऐसा माना जाता है कि की रावण प्रतिदिन लंका से उस स्थान पर आता था और पूजा अर्चना करके जाता था।[2] रावण की मृत्यु के पश्चात शायद यह स्थान उपेक्षित रहा क्योंकि

International Journal of Research in Social Sciences
Vol. 15 Issue 01, January 2025,
ISSN: 2249-2496 Impact Factor: 7.081
Journal Homepage: http://www.ijmra.us, Email: editorijmie@gmail.com
Double-Blind Peer Reviewed Refereed Open Access International Journal - Included in the International Serial Directories Indexed & Listed at: Ulrich's Periodicals Directory ©, U.S.A., Open J-Gate as well as in Cabell's Directories of Publishing Opportunities, U.S.A

संथाल परंपरा के अनुसार ऐसी जानकारी मिलती है कि बैजू नामक चरवाहे ने इस शिवलिंग को पाया था और ऐसा माना जाता है कि बैजू के नाम से ही इस स्थान का नाम बैजनाथ धाम पड़ा।[3]

धार्मिक यात्रियों के लिए बस इतना ही जरूरी नहीं कि यह स्थल रावण द्वारा स्थापित कामना लिंग के लिए जाना जाता है बल्कि इसके पीछे लगातार कोई न कोई घटना जुड़ी हुई है जो इस स्थान को धार्मिक, सांस्कृतिक तरीकों से एक दूसरे से जोड़ती हैं और इस स्थान को धाम के रूप में स्थापित करती है। ऐसी ही एक कथा सतयुग से जुड़ी हुई जिसमें राजा दक्ष अपनी बेटी सती की शादी सुयोग्य वर के साथ करना चाहते थे पर सती शिव से विवाह कर लेती है। उसके बाद राजा दक्ष द्वारा शिव का अपमान और सती के द्वारा अग्नि में स्वयं की आहुति दिए जाने के बाद शिव का प्रचंड रूप का उल्लेख प्राप्त होता है। तत्पश्चात शिव ने क्रोध में दक्ष का शीश को काटकर बकरी के शीश से बदल दिया।[4] अपराध बोध में राजा दक्ष बा-बा की आवाज निकालने लगे। ऐसा माना जाता है कि यहीं से बाबा या बम शब्दों का विकास हुआ जो कांवरियों के द्वारा उद्घोष किया जाता है।[5] उसके बाद शिव ने सती के लाश को अपने कंधे में रखकर पूरे पृथ्वी पर तांडव करना शुरू किया। तब विष्णु ने अपने सुदर्शन चक्र से सती के मृत शरीर को कई हिस्सों में विभक्त कर दिया और शव को खंडित करने के दौरान सती का हृदय देवघर में गिरा था और इसी कारण इस स्थान को हृदय स्थल एवं हृदय पीठ भी कहा जाता है इसलिए यह स्थल शाक्त सम्प्रदाय के लिए भी काफी महत्वपूर्ण है।[6]

एक अन्य कथा के अनुसार शिव ने स्वयं को 12 ज्योतिर्लिंगों में समाहित कर भारत के विभिन्न स्थानों में स्थापित किया था जिनमें से एक बाबा बैधनाथ धाम मंदिर है।[7] मंदार पर्वत जो बाबा बैधनाथ धाम से 70 किलोमीटर दूर स्थित है। एक कथा के अनुसार समुद्र मंथन में मंदार पर्वत का उपयोग हुआ था और मंथन से प्राप्त विष का पान शिव ने किया, जिसके कारण उनके गले में नीला निशान

International Journal of Research in Social Sciences
Vol. 15 Issue 01, January 2025,
ISSN: 2249-2496 Impact Factor: 7.081
Journal Homepage: http://www.ijmra.us, Email: editorijmie@gmail.com
Double-Blind Peer Reviewed Refereed Open Access International Journal - Included in the International Serial Directories Indexed & Listed at: Ulrich's Periodicals Directory ©, U.S.A., Open J-Gate as well as in Cabell's Directories of Publishing Opportunities, U.S.A

पड़ गया और इस नीले निशान के कारण ही शिव को नीलकंठ भी कहा जाता है। भक्तों के मानना है कि उन्हें गंगाजल अर्पित करने से उनके कंठ को आराम पहुंचता है।[8] शायद यही कारण है कि प्रत्येक सावन मास में भक्तों के द्वारा सुल्तानगंज से गंगाजल लेकर बाबा नगरी बैधनाथ धाम में भोलेनाथ को गंगाजल अर्पित करने आते हैं।

"विभिन्न परंपराओं, कथाओं और किंवदन्तीयों को जानने और समझने से यह पता चलता है की शिवलिंग पर जल चढ़ाने की घटना के पीछे बड़ा ही धार्मिक महत्व रहा है। शिवलिंग पर जल चढ़ाने की प्रथा हज़ारों वर्षों से चली आ रही है परंतु आधुनिक काल में इसमें बहुत ज्यादा इजाफा हुआ है।[9] अपनी आराध्य के लिए श्रद्धालु कई किलोमीटर लंबी दूरी की यात्रा पैदल तय करते हैं और साथ में कांवर के द्वारा गंगा का जल लेकर बैधनाथ धाम पहुंचते हैं। शिवलिंग पर गंगाजल अर्पित के पश्चात हवन इत्यादि पूजा पाठ करके वे बाबा से अपनी मनोकामना मांगते हैं और चाहते हैं कि बाबा उनके दुख दर्द, उनके रोग-विकार सब दूर कर दे। इन्हीं सब इच्छाओं को लेकर देश के अलावा विदेशों से भी धार्मिक यात्री बाबा बैधनाथ धाम पहुंचते हैं। सावन मास में कांवर यात्रा अपने उफान पर होती है। लाखों श्रद्धालु प्रतिदिन बाबा के दर्शन करने के लिए पहुंचते हैं, खासकर सोमवार के दिन मंदिर परिसर मे काफी भीड़ मिलती है। बैधनाथ धाम मंदिर से निकलकर कांवर यात्री वासुकिनाथ मंदिर भी जाते है।

बैधनाथ धाम में कांवर यात्रा माघ और सावन महीने में की जाती है। इन दोनों महीना में की जाने वाली कांवर यात्रा में काफी अंतर पाया जाता है और इन दोनों ही कांवर यात्राओं का अपना महत्व है।

माघ महीने में की कांवर यात्रा ज्यादातर बिहार-झारखंड के स्थानीय लोगों से जुड़ी हुई है इस दौरान निम्नलिखित प्रकार के श्रद्धालु कांवर यात्रा करते हुए मिलते हैं।

International Journal of Research in Social Sciences
Vol. 15 Issue 01, January 2025,
ISSN: 2249-2496 Impact Factor: 7.081
Journal Homepage: http://www.ijmra.us, Email: editorijmie@gmail.com
Double-Blind Peer Reviewed Refereed Open Access International Journal - Included in the International Serial Directories Indexed & Listed at: Ulrich's Periodicals Directory ©, U.S.A., Open J-Gate as well as in Cabell's Directories of Publishing Opportunities, U.S.A

खड़ा कांवर ऐसे कांवर यात्री होते हैं जो बिना आराम किया, बिना बैठे, बिना भोजन किए ही लगातार 105 किलोमीटर की लंबी दूरी 24 घंटे के अंदर पूरी करते हैं। खड़ा कांवर अपने व्रत और प्रतिज्ञा को पूरी करना चाहते हैं ताकि उनकी इच्छाएं मनोकामनाएं शिवजी पूरी करें। ज्यादातर खड़े कांवर यात्री अपने साथ दो से तीन लोगों को रखते हैं जो उसकी सहायता के लिए होते हैं, ये सहयोगी कोई और नहीं बल्कि उनके मित्र या सगे-संबंधी ही होते हैं। बैठा कांवर ऐसे कांवर यात्री होते हैं जो अपनी इच्छा अनुसार किसी भी आश्रय स्थल में विश्राम कर सकते हैं। मार्ग में यात्री विश्राम स्थलों की व्यवस्था होती हैं और इन्हें यात्रा करने में काफी समय लगता है। मार्ग में भूख लगने पर भोजन भी ग्रहण कर सकते हैं। डाकबम कांवर ऐसे कांवर यात्री होते हैं जो अपना कांवर को किसी को भी नहीं देते हैं और ना ही किसी एक स्थान पर लंबे समय तक रुकते हैं। एक बार सुल्तानगंज से गंगाजल कांवर में धारण करने के बाद वे सीधा बैधनाथ धाम पहुंचकर, अपने आराध्य को जल अर्पित करने के बाद ही आराम करते हैं। ये डाकबम कांवर यात्री 24 घंटे के अंदर अपनी यात्रा पूरी कर लेते हैं। फलाहारी कांवर ऐसे कांवर यात्री होते हैं जो काफी हद तक बैठा कांवर की तरह ही होते हैं। ये अन्न के स्थान पर फलों का सेवन करते हैं।[10]

माघ माह में कांवर यात्रा करने वाले श्रद्धालु अपने साथ धान की बालियां लेकर चलते हैं, जब वे बाबा बैधनाथ मंदिर पहुंचते हैं तो मंदिर के छत पर इसको फेंक देते हैं। धार्मिक कांवर यात्रियों का ऐसा मानना है कि भारतीय कृषि मानसून द्वारा पोषित है इसलिए वह जो भी अपने आराध्य देव को भेंट देंगे वही आराध्य देव उन्हें वापस भी करेंगे।[11]

सावन माह के कांवर यात्रा का पूरे भारतवर्ष मे सर्वाधिक लोकप्रिय है। इस दौरान देवघर स्थित बैधनाथ धाम मंदिर में देश विदेश से हिन्दू धर्म को मानने जानने वाले श्रद्धालु भारी संख्या में आते है। पुत्र प्राप्ति, रोग विकार इत्यादि कष्टों से मुक्ति पाने के लिए दूर दूर से लोग शिव के दरबार मे आते है। कांवर यात्रियों के

International Journal of Research in Social Sciences
Vol. 15 Issue 01, January 2025,
ISSN: 2249-2496 Impact Factor: 7.081
Journal Homepage: http://www.ijmra.us, Email: editorijmie@gmail.com
Double-Blind Peer Reviewed Refereed Open Access International Journal - Included in the International Serial Directories Indexed & Listed at: Ulrich's Periodicals Directory ©, U.S.A., Open J-Gate as well as in Cabell's Directories of Publishing Opportunities, U.S.A

द्वारा उनके कांवर की बनावट और उसको अलंकृत करने में विशेष ध्यान दिया जाता है, इनके कांवर की लंबाई-चौड़ाई लगभग एक जैसी ही होती है वहीँ ठीक इसके विपरित माघ मास के कांवर यात्रियों के कांवर की लंबाई-चौड़ाई में काफी अन्तर पाया जाता है और इनके कांवर को उतना जायदा अलंकृत भी नहीं किया जाता है। वैसे माघ मास के कांवर यात्री अपने समस्त जरूरी सामान खुद ढोते है लेकिन इसके विपरित सावन माह के कांवर यात्री अपना सामान किसी और से उठवाते है।[12]

कांवर यात्रियों के लिए नियम :

कांवर उठाने वाला यात्री जब सुल्तानगंज में गंगा स्नान करते है और संकल्प लेकर वे 'बम' बन जाते है। बम शब्द का उच्चारण सभी कांवरिया एक दूसरे को संबोधित करने के लिए करते हैं, अगर गलती से भी कोई भी किसी एक का नाम से संबोधन कर लेता है तो उसे फिर से गंगा स्नान कर दोबारा से संकल्प लेना होता है। यहां तक वैसे कांवर यात्री जो की मां-बेटा अथवा पति-पत्नी है उनको भी पांडा (पंडित) द्वारा हिदायत दी जाती है कि वे एक दूसरे का नाम नहीं ले, बल्कि 'बम' बोलकर ही संबोधित करें।[13]

कांवर यात्री को हमेशा को शारीरिक शुद्धि के साथ मानसिक शुद्धि भी नितांत आवश्यकता होती है यही कारण है की कांवर यात्री निरंतर भक्ति गीतों के माध्यम से शिव का जयकारा लगाते हुए स्वयं को शुद्ध रखने का प्रयास करते हैं। इसके साथ ही वे एक डब्बे या बर्तन में गंगाजल लेकर चलते हैं जिसे वह बीच-बीच में खुद पर छिड़कते रहते हैं ताकि वो शुद्ध रहे। मार्ग में अगर किसी धर्मशाला में दिन अथवा रात को रुकना पड़े तो वह दोबारा से स्नान करके ही कांवर को उठाते हैं, इस दौरान वे अपने कांवर को बांस से बने स्टैंड में अपने कांवर को रख देते हैं ताकि कांवर जमीन को ना छुए। अपनी शुद्धता को बनाए रखने के लिए कांवर यात्री एक खास प्रकार के कपड़े का चयन करते हैं जिसमें बोल बम, ओम नमः शिवाय, भोले बाबा जैसे जयकारे लिखे हुए होते हैं। शौच इत्यादि नित-क्रिया के

International Journal of Research in Social Sciences
Vol. 15 Issue 01, January 2025,
ISSN: 2249-2496 Impact Factor: 7.081
Journal Homepage: http://www.ijmra.us, Email: editorijmie@gmail.com
Double-Blind Peer Reviewed Refereed Open Access International Journal - Included in the International Serial Directories Indexed & Listed at: Ulrich's Periodicals Directory ©, U.S.A., Open J-Gate as well as in Cabell's Directories of Publishing Opportunities, U.S.A

पश्चात अपने वस्त्र को ये बदल लेते हैं। पुरुष कांवर यात्री भगवा रंग के छोटे पेंट और बनियान पहनते हैं साथ में इसी रंग का तौलियां भी रखते हैं, वहीं महिलाएं भी भगवा रंग की साड़ी पहनती है। ऐसा विश्वास है कि भगवा रंग इसलिए पहना जाता है क्योंकि कांवरिये भी सन्यासी के भांति साधना में लीन होते हैं, यह साधना पैदल यात्रा के रूप में होती है।[14]

भोजन के संबंध में भी कांवरियों को काफी सतर्क रहना पड़ता है। वे इस दौरान शुद्ध सात्विक भोजन ही ग्रहण करते हैं। वे लहसुन, प्याज का सेवन नहीं करते यहां तक की उसना चावल का भी नहीं। वे सिर्फ अरवा चावल ही ग्रहण करते हैं। उन्हें नशा करने की अनुमति नहीं होती इसलिए खैनी, सिगरेट इत्यादि चीजों का सेवन नहीं करते, परंतु गांजा और भांग का सेवन करते हैं क्योंकि ऐसा मानना है कि यह बाबा भोलेनाथ का प्रसाद है और ऐसा देखा भी जाता है कि शिवलिंग में जल अर्पित करने के दौरान भांग और गांजा चढ़ाया जाता है। विवाहित कांवर यात्रियों को यात्रा के दौरान अविवाहित रूप में ही रहना होता है और ज्यादातर कांवर यात्री बच्चा प्राप्ति की मनोकामना लेकर ही बैधनाथ धाम आते हैं।[15]

बाबा बैधनाथ धाम पहुंचने पर कांवर यात्री मंदिर की पांच परिक्रमा करते हैं, उसके बाद अपने आराध्य को शीश नवाते हैं। मुख्य पुजारी से मिलने के पश्चात पुजारी उनके कांवर को एक तरफ रखवा कर, उन्हें शिव गंगा में स्नान करने के लिए भेज देते हैं। स्नान से पूर्व शिव गंगा की पूजा करनी होती है तब जाकर स्नान करते हैं वापस मंदिर आने पर मुख्य पांडा इन्हें संकल्प करवाते हैं उसके बाद ही अपने कांवर में लाए गंगाजल शिवलिंग को अर्पित करते हैं। इसके बाद क्रमवत हवन, ब्राह्मण भोज, कुमारी भोजन, गठबंधन, पताका इत्यादि रस्मों को अपने संकल्प अथवा प्रतिज्ञा के अनुसार पूरा करते हैं।बाबा बैधनाथ मंदिर में जल चढ़ाने के बाद कांवर यात्री वासुकिनाथ मंदिर जरूर जाते हैं ताकि उनकी कांवर यात्रा पूरी हो सके।[16]

International Journal of Research in Social Sciences
Vol. 15 Issue 01, January 2025,
ISSN: 2249-2496 Impact Factor: 7.081
Journal Homepage: http://www.ijmra.us, Email: editorijmie@gmail.com
Double-Blind Peer Reviewed Refereed Open Access International Journal - Included in the International Serial Directories Indexed & Listed at: Ulrich's Periodicals Directory ©, U.S.A., Open J-Gate as well as in Cabell's Directories of Publishing Opportunities, U.S.A

कांवर यात्रा मार्ग :

कांवर यात्रियों की यात्रा बिहार राज्य के भागलपुर जिला के सुल्तानगंज शहर से प्रारंभ होती है सुल्तानगंज में गंगा नदी बहती है जिसमें स्नान करके कंवारिया कांवर उठाते हैं। इसके बाद वे निम्न मार्गों से होते हुए बैधनाथ धाम पहुंचते हैं। सुल्तानगंज में गंगा धाम में उतरवाहनी गंगा से बाबा बैधनाथ धाम के बीच की दूरी 105 किलोमीटर है।

सुल्तानगंज से देवघर तक कांवर यात्रा मार्ग में प्रमुख शिविर स्थानों की सूची नीचे दी गई है जो बिहार और झारखंड के कई जिलों से होकर गुजरती है:-

सुल्तानगंज से कामराईस	6 कि.मी
कामराईस से असरगंज	6 कि.मी
असरगंज से तारापुर	8 कि.मी
तारापुर से रामपुर	7 कि.मी
रामपुर से कुमारसार	8 कि.मी
कुमारसार से चंदन नगर	9 कि.मी
चंदन नगर से जलेबीया मोड़	6 कि.मी
जलेबीया मोड़ से सूइया	8 कि.मी
सूइया से अब्रारखिया	7 कि.मी
अब्रारखिया से कटोरिया	8 कि.मी
कटोरिया से लक्ष्मण झूला	8 कि.मी
लक्ष्मण झूला से इनारावरण	8 कि.मी

International Journal of Research in Social Sciences
Vol. 15 Issue 01, January 2025,
ISSN: 2249-2496 Impact Factor: 7.081
Journal Homepage: http://www.ijmra.us, Email: editorijmie@gmail.com
Double-Blind Peer Reviewed Refereed Open Access International Journal - Included in the International Serial Directories Indexed & Listed at: Ulrich's Periodicals Directory ©, U.S.A., Open J-Gate as well as in Cabell's Directories of Publishing Opportunities, U.S.A

इनारावरण से गोरीयारी	7 कि.मी
गोरीयारी से भूत बांग्ला	7 कि.मी
भूत बांग्ला से बैद्यनाथ धाम	2 कि.मी
कुल दूरी =	105 कि.मी

स्रोत :- देवघर.को (deoghar.co)

कांवर यात्रा के दौरान सेवा शिविरों में 24 घंटे कांवरियो के लिए मुफ्त भोजन और दवाओं की व्यवस्था की जाती है। रास्ते में कांवरियों की सेवा के लिए सरकार के साथ-साथ निजी संगठन भी उत्साहपूर्वक भाग लेते हैं।

श्रावण मास के श्रावणी मेले में बाबा धाम आने वाले कांवरियों को सुलभ जलार्पण कराने के लिए प्रशासन ने तीन तरह की व्यवस्था की है। पहले व्यवस्था के तहत सामान्य कतार लगेगी। दूसरी व्यवस्था शीघ्र दर्शनम की है जिसमें प्रति व्यक्ति को □500 देने होते हैं। इसके अलावा तीसरी व्यवस्था ब्राह् अरघा से जलार्पण की है। यह मंदिर परिसर स्थित निकास द्वार से सटा हुआ है।[17]

कांवर यात्रा से आर्थिक लाभ :

बैधनाथ धाम में श्रावण मास में तीर्थ यात्रियों की संख्या

वर्ष	तीर्थयात्री (हज़ारों में)
2003	1610.1
2004	1610.2
2005	1790.1
2006	1637.8
2007	1701.7
2008	1734.9
2009	1891.3
2010	1971.3

International Journal of Research in Social Sciences
Vol. 15 Issue 01, January 2025,
ISSN: 2249-2496 Impact Factor: 7.081
Journal Homepage: http://www.ijmra.us, Email: editorijmie@gmail.com
Double-Blind Peer Reviewed Refereed Open Access International Journal - Included in the International Serial Directories Indexed & Listed at: Ulrich's Periodicals Directory ©, U.S.A., Open J-Gate as well as in Cabell's Directories of Publishing Opportunities, U.S.A

2011	2041.9
2012	2197
2013	2344
2014	2495.1

स्रोत - झारखंड पर्यटन विभाग

प्राप्त आंकड़ों के अनुसार 2003 से 2014 तक तीर्थ यात्रियों की संख्या में काफी बढ़ोतरी हुई है। श्रावण मास से संबंधित 2003 में जहां भक्तों की संख्या 1610.1 हजार थी, वहीं 2014 में उनकी संख्या बढ़कर 2495.1 हजार हो गई। वर्ष 2023 की बात की जाए तो इस बार श्रावण मेले का आयोजन दो माह का हुआ था। नवभारत टाइम्स की खबर के अनुसार 29 लाख श्रद्धालुओं ने बाबा बैधनाथ पर जलाभिषेक किया। देवघर के उपायुक्त विशाल कुमार के अनुसार 4 जुलाई से 31 जुलाई 2023 तक 29 लाख श्रद्धालुओं ने अरघा के माध्यम से जलाभिषेक किया, वहीं शीघ्र दर्शनम की व्यवस्था के माध्यम से लगभग 67 हजार श्रद्धालुओं ने बाबा बैधनाथ शिवलिंग पर जल चढ़ाया। उन्होंने यह भी बताया कि बाबा बैधनाथ मंदिर को दान और अन्य स्रोतों से तकरीबन 3 करोड़ 8 लाख 35 हजार का आय हुआ है जिसमें शीघ्र दर्शनम से 2 करोड़ 79 हज़ार 900 रुपये का आय हुआ हैं, वहीं बाकी बाबा बैधनाथ मंदिर, पार्वती मंदिर और अन्य मंदिरों में रखे दान पात्रों और अन्य स्रोतों से आय हुआ।[18]

निष्कर्ष :

उपरोक्त घटनाएं जो विभिन्न कथा, किंवदन्ती और परंपराओं पर आधारित है तथा प्राप्त आंकड़ों के अध्ययन से यह प्रतीत होता है कि कांवर यात्रा हिंदू धर्म में व्यापक महत्व है। ऐसी भी जानकारी प्राप्त होती है कि कांवर यात्रा का इतिहास काफ़ी प्राचीन रहा है और इस कारण यात्रा करने वाली यात्रियों को नियम अनुसार ही यात्रा करनी होती है। उनके कांवर उठाने का मुख्य कारण पुत्र प्राप्ति और अन्य प्रकार के मनोकामनाओं के साथ-साथ रोग-विकार से भी मुक्त होना है। हम यह भी देखते हैं कि अपने व्रत का पालन करते हुए कांवरियों को सरकार एवं

International Journal of Research in Social Sciences
Vol. 15 Issue 01, January 2025,
ISSN: 2249-2496 Impact Factor: 7.081
Journal Homepage: http://www.ijmra.us, Email: editorijmie@gmail.com
Double-Blind Peer Reviewed Refereed Open Access International Journal - Included in the International Serial Directories Indexed & Listed at: Ulrich's Periodicals Directory ©, U.S.A., Open J-Gate as well as in Cabell's Directories of Publishing Opportunities, U.S.A

निजी संगठन के द्वारा बहुत सारी जरूरी सुविधाएं भी प्रदान की जाती है, वहीं दूसरी और इस धार्मिक कांवर यात्रा से देवघर जिला प्रशासन और बैधनाथ धाम मंदिर समिति के साथ-साथ देवघर के स्थानीय लोगों को भी आर्थिक लाभ की प्राप्ति होती है। कांवर यात्रा के परिणामस्वरूप ही आज देवघर सांस्कृतिक स्थल के रूप में निखर कर सामने आया है और अब भारत सरकार द्वारा देवघर को सांस्कृतिक पर्यटन स्थल के रूप में स्थापित करने का प्रयास किया जा रहा है।

सन्दर्भ सूची :

1) '*संक्षिप्त शिव महापुराण',* कोटिरुद्र संहिता, अध्याय - 28, पृष्ठ - 525-528, गीता प्रेस द्वारा अनुवादित
2) *'मत्स्य पुराण',* अध्याय - 22, पृष्ठ - 85, गीता प्रेस द्वारा अनुवादित
3) मित्र, राजेन्द्र लाल, *'द टेंपल ऑफ देवघर'*, ऐशियाटिक सोसायटी ऑफ बंगाल, खंड - LII, भाग - I, 1833, पृष्ठ - 170-171
4) *'पद्म पुराण'* सृष्टि खंड, अध्याय - 11, पृष्ठ - 14, गीता प्रेस द्वारा अनुवादित
5) वही, पृष्ठ - 15
6) वही, पृष्ठ - 16
7) मित्र, राजेन्द्र लाल, पूर्व उधृत, पृष्ठ - 172
8) *'पद्म पुराण',* पूर्व उधृत, पृष्ठ - 12-14
9) बोस, रुमा, *'वांकिग विद पिलग्रिम'*, रुटलेज टेलर एंड फ्रांसिस ग्रुप, लंदन एंड न्यूयॉर्क, 2019, पृष्ठ - 30
10) नारायण, एस., *'सेक्रेड काम्प्लेक्स ऑफ देवघर एंड राजगीर'*, कांसेप्ट पब्लिकेशिंग कंपनी, नयी दिल्ली, 1983, पृष्ठ - 69
11) वही, पृष्ठ - 70
12) वही, पृष्ठ - 71
13) बोस, रूमा, पूर्व उधृत, पृष्ठ - 256
14) नारायण, एस., पूर्व उधृत, पृष्ठ - 72-73
15) बोस, रुमा, पूर्व उधृत, पृष्ठ - 281-283
16) मित्र, राजेन्द्र लाल, पूर्व उधृत, पृष्ठ - 183

17) संपादकीय समुह, अंतिम अद्यतन - 15 सितंबर 2023, 18 सितंबर 2023, वेब पता - https://deoghar.co/hindi/kanwar-yatra/

18) सिन्हा रवि (सं.), कुमार रंजीत (पत्रकार), अंतिम अद्यतन - 3 अगस्त 2023, 17 सितंबर 2023, वेब पता - https://navbharattimes.indiatimes.com/state/jharkhand/deoghar/deoghar-baba-baidyanath-temple-29-lakh-devotees-performed-jalabhishek-in-28-days-three-crore-income/articleshow/102369899.cms